नाम :- डॉ० बलबीर कुमार झा
सहायक प्राचार्य,
मैथिली विभाग,
एम० एल० टी० कॉलेज, सहरसा

वर्ग :- P. P. I
पत्र :- प्रथम (I)
विषय :- मैथिली (प्रतिष्ठा)
दिनांक :- 12-10-2020
Lecture No- 44
M. No - 6202966781
Email ID - balbirJhamlt72@gmail.com

शीर्षक :- विद्यापतिक भक्ति भावना।

कवि कोकिल महाकवि विद्यापति मात्र मिथिलाएक नहि अपितु समस्त विश्वक कवि आ गीतकार छलाह जनिक गीतक माध्यम सँ समस्त पुर्वोत्तर भारत वर्ष प्रेरणा ग्रहण करने छल। हिनक पदावली मे दू वर्गक रचना अछि - पहिल श्रृंगारिक गीत आ दोसर भक्तिक गीत। ओना तँ हिनक श्रृंगारिक गीत बेस ख्याति पओलक। आ तहि लेल हिनका श्रृंगारिक कवि सेहो कहल जाइछ। किन्तु हिनक भक्ति गीत सेहो अद्वितीय अछि।

विद्यापति पदावली केर अध्ययन कएलासँ ई स्पष्ट भए जाइत अछि जे महाकवि विद्यापति कोनो देवता विशेषक कट्टर उपासक नहि छलाह। हिनक भक्ति भावना कखनहुँ जे शिवक प्रति उमड़ल अछि तँ कखनहुँ दुर्गाक प्रति, कखनहुँ गंगाक प्रति, तँ कखनहुँ सीताक प्रति आ कखनहुँ रामक प्रति तँ कखनहुँ कृष्णक प्रति आ कखनहुँ ई सभ देवता के विभिन्न रूपेँ एकके बुझल अछि। परन्तु ई तँ अवश्य मानए पड़त जे

P.T.O

विद्यापतिक भक्ति भावना शिवक प्रति विशेष उमड़ल अछि।

शिवक विभिन्न अवस्थाक वर्णन महाकवि अपन पद्य मे कएलनि अछि। हुनक रूप वर्णनक क्रम मे लिखैत छथि—

"पंच नयन तिन नयन विशाल,
बसन विहुन ओढ़न बघ छाल।"

नव वरक रूप मे चित्रित करैत विद्यापति लिखैत छथि—

"चल्‌ शिव कोबराक चालि है।"

एहि क्रम मे महाकवि अर्द्धनारीश्वर रूप मे वर्णन करैत सेहो नहि चुकैत छथि—

"जय जय शंकर जय त्रिपुरारि।
जय अध पुरुष जयति अध नारि।"

एतबहि नहि विद्यापति ताण्डव नृत्यक वर्णन सेहो कएने छथि जे महेशवाणी रूप मे प्रचलित अछि—

"आजु नाथ एक व्रत महासुख लागत है।
तोहे शिव धरु नटवेष कि डमरु बजाबह है।"

मिथिलाक प्राय: सब माँगलिक काज गोसाउनिक अराधना सँ प्रारम्भ होइत अछि।

यथा!— "जय जय भैरवि असुर भयाउनि।
पशुपति भामिनि माया।।
सहज सुमति वर दिअ हे गोसाउनि,
अनुगति गति तुअ पाया।"

गंगा स्तुतिक दुइ गोट पद उपलब्ध अछि—

"बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे।
छोड़इत निकट नयन बह नीरे।"

P.T.O

जखन ओ सांसारिकता सँ तंग आबि गेल छलाह तँ अपन आराध्य शिव सँ कष्टहरण तथा भवसागर पार करबाक प्रार्थना करैत छथि।

यथा:- "कखन हरब दुख मोर हे भोलानाथ।
दुखहि जनम भेल दुखहि जीवन गेल,
सुख सपनहुँ नहि भेल हे भोलानाथ।"

परन्तु जीवनक अंतिम काल मे कृष्णाक नामे भक्ति भावसम्पन्न रचना सेहो कयलनि—

"माधव हम परिणाम निराशा,
तुहुँ जगतारण दीन दयामय अतय
तोहर विश्वासा।"

पुनः "तातल सैकत वारि बिन्दु सम
सुतमित रमणि समाजे।"

एहि तरहेँ हम देखैत छी जे महाकवि विद्यापतिक भक्ति भावना अत्यन्त सहज रूपेँ उक्त पद सभ मे अभिव्यक्त भेल अछि। हुनक महेशवाणी आ गोसाउनिक गीत मिथिलाक जन-जन केर ठोर पर रहैत अछि जे महाकविकेँ अमर बनौने अछि।

— x —

बलवीर कुमार झा